केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
परीक्षा – मार्च 2010
अंक – योजना हिंदी (ऐच्छिक)
कूटबंध - 29/1
29/2
29/3

कक्षा – **XII**

सामान्य निर्देश :

1. अंक–योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक योजना में दिए गए उत्तर–बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न किंतु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

2. मूल्यांकन करने वाले परीक्षकों के साथ जब तक प्रथम दिन वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप से अंक–योजना पर भली–भांति आद्योपांत विचार–विनिमय नहीं हो जाता, तब तक मूल्यांकन आरंभ न कराया जाए।

3. मूल्यांकन अपनी निजी व्याख्या के अनुसार न करके अंक–योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

4. प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दाईं ओर अंक दिए जाएं। बाद में उपभागों के इन अंकों का योग बाईं ओर के हाशिए में लिखाकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।

5. यदि प्रश्न का कोई उपभाग नहीं है तो उस पर बाईं ओर ही अंक देकर उन्हें गोलाकृत कर दिया जाए।

6. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का अतिरिक्त उत्तर भी लिख दिया है तो उस उत्तर पर अंक दिए जाएं जिसे पहले लिखा गया हो।

7. संक्षिप्त, किंतु उपयुक्त विवेचन के साथ प्रस्तुत किया गया बिंदुवत उत्तर विस्तृत विवेचन की अपेक्षा अच्छा माना जाएगा। ऐसे उत्तरों को उचित महत्व देने की उपेक्षा है।

8. बार–बार की गई एक ही प्रकार की अशुद्ध वर्तनी पर अंक न काटें।

9. अपठित गद्यांश और काव्यांश के प्रश्नों में परीक्षार्थियों की समझ, बोध–क्षमता और ग्रहणशीलता का परीक्षण किया जाता है, अतएव इनके उत्तरों में अभिव्यक्तिगत योग्यता को अधिक महत्व न दिया जाए जिससे परीक्षार्थियों को अकारण हानि हो।

10. मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने – 0 से 100 का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात् परीक्षार्थियों ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे शत–प्रतिशत अंक दिए जाएँ ।

केंदीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
परीक्षा – मार्च, 2010
अंक योजना हिंदी (ऐच्छिक)
कक्षा – XII **कूटबंध 29/1, 29/2, 29/3**

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत/मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1	29/2	29/3		
1.	1 (क)	2 (क)	1 (क)	अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर : सौन्दर्य वस्तु या दृश्य में नहीं देखने वाले की दृष्टि और उसकी सौंदर्य चेतना में अवस्थित है।	1
	(ख)	(ख)	(ख)	ठोस भौतिक–प्राकृतिक पदार्थों, मानवीय भावनाओं या काल्पनिक संसार के साथ–साथ चींटी, छिपकली, चूहे, बिल्ली जैसे विषयों पर।	1
	(ग)	(ग)	(ग)	आज का कवि कदम–कदम पर जीवन और जगत की सभी राहों, विषयों, पदार्थों एवं जीवों को अपनी लेखनी का विषय बनाता है।	2
	(घ)	(घ)	(घ)	हमारे भावों–विचारों को उदात्त बनाना, उनमें परिष्कार कर उन्हें जनोपयोगी बनाना।	1
	(ड.)	(ड.)	(ड.)	कुटिलता, क्रूरता, दंभ, नीचता जैसे दुर्गुणों से वितृष्णा।	2
	(च)	(च)	(च)	महापुरुषों के भावों–विचारों की उच्चता से काव्य में भी गरिमा आती है।	1
	(छ)	(छ)	(छ)	कबीर, रहीम, तुलसी आदि की अनेक प्रेरणाप्रद पंक्तियां निराशा में आशा का संचार कर डूबते का सहारा बनती हैं। इसलिए सूक्तियों के रूप में प्रस्तुत।	1
	(ज)	(ज)	(ज)	भावों और विचारों की उच्चता से काव्य में गरिमा।	1
	(झ)	(झ)	(झ)	सरल–सहज जीवन भी आकर्षक, आनंददायक निराशा में आशा का संचार, डूबते का सहारा।	1
	(ञ)	(ञ)	(ञ)	'काव्य और जीवन', 'जीवन में काव्य का महत्व' या अन्य कोई उपयुक्त शीर्षक।	1
	(ट)	(ट)	(ट)	'अन्' उपसर्ग 'वाद'/'ई' प्रत्यय	1
	(ठ)	(ठ)	(ठ)	पर्याय – घमंड – दंभ (पूरा एक अंक दें)	1
	(ड)	(ड)	(ड)	मिश्रवाक्य – कविता की जो प्रेरणाप्रद पंक्तियां होती हैं, वे निराशा में आशा का संचार कर सकती हैं।	1
2.	(क)			अपठित काव्यांश में पांच प्रश्न पूछे गए हैं। प्रत्येक उत्तर का एक अंक है । ग्राम देवता भारत के गांव मे रहता है क्योंकि उसे शहरी कोलाहल एवं चकाचौंध की अपेक्षा गांव की मिट्टी, प्रकृति का स्वच्छ विशुद्ध वातावरण प्रिय है।	1×5=5 अंक
	2 (ख)	1 (ख)	2 (ख)	सोने–चांदी के भौतिक आकर्षणों की अपेक्षा खेतों की मिट्टी और एकाकी सिमटा .... सा कर्मरत जीवन ही प्रिय है। जीवन की चकाचौंध की अपेक्षा प्रकृति का स्वच्छ वातावरण प्रिय है।	
	(ग)	(ग)	(ग)	भारत का किसान अपनत्व भाव से शुद्ध कर्म एवं शारीरिक श्रम से दिन–रात पसीना बहाकर अन्न–धान पैदा करता है। यह पसीना ही गंगा जल की धवल धार है।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
	(घ)	(घ)	(घ)	कवि किसान को जन–मन का अधिनायक मानते हुए उसे देश के राजसिंहासन पर बिठाना चाहता है, क्योंकि किसान देश को धन–धान्य से भरपूर कर खुशहाल बनाता है।	
	(ङ.)	(ङ.)	(ङ.)	हे किसान, तुम निरंतर मिट्टी में कर्मरत रह खेती–बाड़ी करने वाले, अन्न–धान पैदा करने वाले और बंजरभूमि को उपजाऊ बना देश को वैभवशाली बनाने वाले हो, अतः तुम विशेष हो।	
	2	1	2	अथवा	
	(क)	(क)	(क)	निरुद्यमी प्राणी, भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाले लोग।	
	(ख)	(ख)	(ख)	मनुष्य के उद्यम के आगे, कठोर परिश्रमी लोगों की हिम्मत और श्रमजल के आगे प्रकृति झुकती है। यह धरा रत्नगर्भा है, श्रम द्वारा ही सब कुछ मिलता है।	
	(ग)	(ग)	(ग)	शोषण करने वाले शोषक भोले–भाले परिश्रमी लोगों पर अन्याय, अत्याचार करते हैं और दूसरों का श्रम–फल भोगते हैं, हेरा–फेरी कर अपने अवगुणों और किए गए अन्याय को भाग्यवाद का नाम देते हैं, पर है ये शोषण का हथियार ही अर्थात् यह शोषण का ही दूसरा नाम।	
	(घ)	(घ)	(घ)	कर्मवीर, धर्मवीर, युद्धवीर अर्थात् सभी कर्मठ, परिश्रमी लोग असंभव को संभव में तथा दुर्भाग्य व अप्राप्य को सौभाग्य व प्राप्य में बदल लेते हैं। भ्रुवों से पानी बहाकर अर्थात् मेहनत कर, पसीना बहाकर।	
	(ङ.)	(ङ.)	(ङ.)	काव्यांश का मुख्यभाग – पुरुषार्थ द्वारा जीवन यापन करना न कि भाग्य के भरोसे रहना। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। वह श्रम के बल पर उसे बनाता है।	
				खंड – 'ख'	
3	3	4	3	किसी एक विषय पर निबंध – अंक विभाजन इस प्रकार है – • भूमिका 1 • विषयवस्तु का सुसंबद्ध प्रतिपादन 5 • उपसंहार 1 • भाषा शुद्धता, अभिव्यक्ति कौशल 3	10 अंक
4	4	3	4	पत्र का अंक विभाजन – • पत्र का प्रारूप : औपचारिकताएं 2 • विषय वस्तु का प्रतिपादन 2 • भाषा–शैली 1	5 अंक
5	5	–	–	रेडियो के लिए समाचार–लेखन की बुनियादी बातें :– क) साफ–सुथरी और टाइप कॉपी – जिससे समाचार–वाचक को कोई कठिनाई न हो।	5 अंक
				ख) पृष्ठ के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया, एक पंक्ति में 12–13 शब्द, पंक्ति के आखिर में कोई शब्द अधूरा नहीं, आखिर में कोई पंक्ति अधूरी नहीं, एक से 10 तक के अंक शब्दों में और 11 से 999 तक अंकों में।	
				ग) डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षर के प्रयोग में सावधानी बरती जानी चाहिए।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
	5 अथवा	–	–	इंटरनेट पत्रकारिता यानी ऑनलाइन, वेब पत्रकारिता। उसे आप सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक सवारी के आदान–प्रदान के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक 'ई मेल' के जरिए भेजने और समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन तथा पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है। चंद मिनटों में इंटरनेट विश्वव्यापी संजाल के भीतर से कोई भी पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है।	
		5		अखबारों में समाचारों के अलावा कई तरह का पत्रकारीय लेखन छपता है। इनमें फ़ीचर प्रमुख है। फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है। लेखन–शैली :– 1. इसका एक तय ढांचा नहीं होता। 2. कथात्मक शैली की भांति। 3. भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक हो, दुरूह नहीं।	1
			5	'विशेष लेखन – यानी किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। समाचार पत्रों के अलावा टी.वी. और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है। पत्रकारों का समूह भी अलग। भाषा–शैली – सरल, विषयानुसार शब्दावली – जैसे – 'मुद्रास्फीर्ति', 'राजकोषीय घाटा', 'सोने में भारी उछाल', 'चांदी लुढकी'। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। अपने बीट से जुड़ा लेख तो शैली उलटा पिरामिड शैली। फीचर लिख रहे हैं तो शैली कथात्मक। खेल, कारोबार, स्वास्थ्य, पर्यावरण शिक्षा जैसे विषय पर विशेष लेखन।	
			5 अथवा	टी.वी. चैनलों में सूचनाएं, खबरें कई चरणों से होकर दर्शकों तक पहुंचती हैं – 1. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज। 2. ड्राई एंकर 3. फ़ोन इन 4. एंकर – विजुअल 5. एंकर – बाइट 6. लइव 7. एंकर – पैकेज	
6.	6 (क)	6 (ड.)	6 (क)	पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर : खोजी रिपोर्ट – इसमें रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के द्वारा ऐसे तथ्य सामने लाता है जो पहले से उपलब्ध नहीं थे। इसका इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।	5 अंक 1
	(ख)	(घ)	(ख)	सम्पादकीय लेखन से तात्पर्य, संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाली अखबार की किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति उसके सम्पादक की राय। 'सम्पादकीय' किसी व्यक्ति विशेष के विचार का लेखन नहीं होता। इसे लिखने का अधिकार संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है।	1
	(ग)	(ग)	(ग)	भारत में समाचार पत्रकारिता का आरंभ सन् 1780 जेम्स ऑगस्ट सिकी के बंगाल गजट से हुआ।	1

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
	(घ)	(ख)	(घ)	हिंदी में प्रसारण करने वाले टी.वी. समाचार चैनल 1. आज तक 2. स्टार न्यूज़ 3. ज़ी न्यूज 4. इण्डिया टी.वी. इनमें से कोई दो लिखें – आजकल प्रसारित होने वाले नवीनतम चैनल भी लिखे जा सकते हैं।	1
	(ड.)	(क)	(ड.)	क्योंकि टेलीविज़न पर समाचार वाचन के साथ–साथ घटनाओं को दिखाया भी जाता है। यह देखने और सुनने दोनों का माध्यम है।	1
7.				<u>खंड – 'ग'</u>	
				सप्रसंग व्याख्या • संदर्भ–कविता और कवि का नाम • पूर्वापर प्रसंग–निर्वाह • व्याख्या – बिंदुओं का स्पष्टीकरण • शिल्पगत विशेषताएं • भाषा–शुद्धता व अभिव्यक्ति कौशल	½+½ 1 4 1 1 } 8
	7.	8 अथवा	8	• 'पद्मावत' के 'बारहमासा' से उद्धृत, – मलिक मुहम्मद जायसी • फाल्गुन मास में नागमती की विरह –वेदना का चित्रण • व्याख्या – बिंदु – अधिक ठंड, वृक्षों की डालियों का पत्र–विहीन होना। – वृक्षों के फल–फूल विरह–वेदना बढ़ा रहे हैं। – रंग डालना, नृत्य करना और इससे नागमती के हृदय में विरह की होली जलना। – राख बनकर ही प्रिय का स्पर्श पाना चाहती है। • विशेष – – नागमती का विरह चरमोत्कर्ष पर। – रूपक, अनुप्रास अलंकार! – अवधी भाषा। – वियोग श्रृंगार। – चौपाई – दोहा छंद।	1
	अथवा	8	अथवा	• 'सत्य', विष्णु खरे। • सत्य को पकड़ पाना कठिन है, उसका कोई आकार नहीं। • <u>व्याख्या–बिंदु</u> – – महाभारत कालीन कथा के प्रसंग द्वारा स्पष्टीकरण। – युधिष्ठिर ने सत्य को दृढ़ता से पाने का प्रयास किया। यदि हम भी ऐसा करें तो यह भी संभव है कि सत्य स्वयं ही हमारे सम्मुख आकर खड़ा हो जाए। – दृढ़ संकल्प से तलाशने पर सत्य हमारे अंदर अपना प्रकाश भर देता है। – हमारे मन में संशय बना रहता है कि सत्य हमारे भीतर मौजूद है भी या नहीं।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं. 29/1	29/2	29/3	उत्तर संकेत / मूल्य–बिदु	निर्धारित अंक विभाजन
				• विशेष – – सत्य एक अनुभूति है। एक जीवन–मूल्य है। उसे पहचानने के लिए दृढ संकल्प चाहिए। – पुनरुक्ति, दृष्टांत, विरोधाभास अलंकार। – 'सत्य' का मानवीकरण। – भाषा का लाक्षणिक प्रयोग।	
8.				(किन्हीं दो के उत्तर अपेक्षित)	3+3=6 अंक
	8 (क)			राम की वस्तुओं को देख कौशल्या भाव–विह्वल हो उठतीं। राम की जूतियों को नयनों से लगातीं। राम को नींद से जगाने की बात कहतीं। राम को कभी राजा दशरथ की गोद में जाने की बात कहतीं। वन–गमन का ध्यान आते ही स्तब्ध और चकित रह जातीं।	
	(ख)			कवि को असमय दिवंगत हुई पुत्री की स्मृति बेचैन कर रही है। पिता ने दुख से भरे अपने जीवन की कथा किसी से नहीं कही। उसे यह बात सालती रही कि पुत्री के प्रति अपने धर्म का पालन नहीं कर पाया।	
	(ग)			सृजन–हेतु कवि चट्टानें, पत्थर, बंजर व ऊसर भूमि को तोड़ने की बात करता है। मन की बंजर भूमि को, ऊब, खीज, उदासी को तोड़ कर उसमें नवजीवन के आशा–अंकुर बोना चाहता है।	
		7 (क)		• राम अपराधी व्यक्ति पर भी क्रोध नहीं करते तो सामान्य व्यक्ति पर तो संभव ही नहीं। • खेलने में भी अप्रसन्नता नहीं दर्शाई। • भरत का दिल नहीं दुखा सकते। खेल में जीतकर भी हार जाते थे।	
		(ख)		'सरोज–स्मृति' शोकगीत है। कवि पुत्री की आकस्मिक मृत्यु पर विवशता प्रकट करता है। स्वयं को अकर्मण्य पाता है। कुछ न कर पाने से स्वयं को कोसता है। कविता में कवि का अपना जीवन–संघर्ष भी प्रकट हुआ है। उसे पुत्री के रंग–रूप में अपनी पत्नी की झलक मिलती है। पुत्री के पालन–पोषण के लिए नानी की शरण में भेजना पड़ा। यह भी मानसिक दुख का कारण है।	
		(ग)		वसंत का आगमन अचानक होता है। धूल के बवंडर से धूल की किर–किराहट का एहसास। यह वसंत अलग है। गंगा, गंगा के घाट तथा मंदिरों और घाटों के किनारे बैठे भिखारियों के कटोरों में वसंत उतरता प्रतीत होता है। (1+2)	1
			9 (क)	कौशल्या इसके माध्यम से राम को पुनः लौटने का आग्रह करती हैं। अपने लिए नहीं घोड़ों के लिए बुला रही है, क्योंकि उनसे अश्वों का दुख देखा नहीं जाता। प्रतिदिन दुर्बल होते घोड़े राम का स्पर्श पाकर भली प्रकार जी सकेंगे। पशुओं के प्रति करुणा भाव व्यक्त हुआ है।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
			(ख)	'तोड़ो' उद्‌बोधन कविता है। सृजन, हेतु भूमि तैयार करने के लिए चट्टानें, ऊसर और बंजर भूमि को तोड़ने का आह्‌वान। यह बंजर प्रकृति में है तो मानव–मन में भी है। कवि मन में व्याप्त ऊब और खीज को भी तोड़ने की बात करता है अर्थात् उसे भी उर्वर बनाने की बात करता है। मन की ऊब सृजन में बाधक है। सृजन का आकांक्षी कवि इसे दूर करने की बात करता है। कवि मन के बारे में प्रश्न उठाकर आगे बढ़ता है। सृजन के लिए तोड़ने की प्रक्रिया अति आवश्यक है। (2+1)	
			(ग)	कवि निराश और हताश लोगों के जीवन में आशा का संचार करना चाहता है। (मुक्त उत्तर, हां या ना में तर्कसंगत उत्तर स्वीकार्य)	
9	9 (क)	9 (क)	7 (क)	भाव सौंदर्य तथा शिल्प–सौंदर्य का उल्लेख • बनारस शहर की विचित्रता। • गंगातट पर उसके सौंदर्य का चित्रण। • मनुष्य के दो हाथों के स्तंभ पर सूर्य को अर्घ्य देता हुआ अपने मदमस्त, दुनिया से बेखबर। • यहां आस्था, श्रद्धा, निष्ठा और विरक्ति का मिला–जुला रूप दर्शित होता है। शिल्प सौंदर्य – • प्रकृति वर्णन में मानवीकरण। • लाक्षणिकता का प्रयोग। • बनारस शहर के सौंदर्य का मार्मिक चित्रण। • सहज भाषा, खड़ी बोली।	3+3 = 6 अंक
	9 (ख)	9 (ख)	7 (ख)	1. इन काव्य पंक्तियों में देवसेना का असफल प्रेम की कल्पना में डूबना। 2. यौवनकाल में स्कन्दगुप्त का देव सेना के प्रति उपेक्षा भाव। 3. पर जीवन के अंतिम मोड़ पर देव सेना के प्रति अपना प्रणय निवेदन किया। 4. यह निवेदन देव सेना को विहाग–राग के समान लगा। शिल्प–सौन्दर्य – 1. स्वप्न को श्रमित कहने में गहरी व्यंजना है 2. गहन–विपिन और 'तरु–छाया' सामासिक शब्द हैं। स्मृति बिम्ब साकार हो उठा है।	
	9 (ग)	9 (ग)	7 (ग)	भाव सौंदर्य – • नायिका की प्रेम–दशा की विचित्रता का उल्लेख। • लंबी अवधि से प्रियतम को निहारती आ रही है फिर भी नयनों की प्यास नहीं बुझी। काव्य सौंदर्य – • विशेषोक्ति, अतिशयोक्ति अलंकार। • मैथिली भाषा। • माधुर्य गुण। • प्रेम की पल–पल होने वाली नवीनता का वर्णन।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं. 29/1	29/2	29/3	उत्तर संकेत/मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
10.	10	11	10	गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या : अंक विभाजन – पाठ और लेखक का नाम = ½ + ½ – पूर्वापर संबंध निर्वाह = 1 – व्याख्या = 3 विशेष कथन तथा भाषा शैली = 1 i) लेख 'कुटज'। लेखक – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी। ii) जीना भी एक कला है – सारा संसार अपने लिए जी रहा है। ऋषि याज्ञवल्क्य ने यह बात अपनी पत्नी मैत्रेयी से कही थी। iii) लेखक को यह कथन विचित्र लगा कि दुनिया में सभी अपने लिए जी रहे हैं। यहां प्रेम, त्याग, परमार्थ जैसी कोई बात नहीं है। यदि यही अंतिम सत्य है, तो देश–प्रेम, कला–साहित्य की उपासना आदि बातें असत्य हैं, किंतु लेखक कहते हैं कि 'अपने लिए जीना' ऐसा सोचना सही नहीं है। स्वार्थ से ऊपर है – प्रेम, परमार्थ। विशेष – विवेचनात्मक शैली। भाषा–सहज, प्रवाहमयी, तत्सम शब्दावली।	6 अंक
	10 अथवा	11 अथवा	10 अथवा	अथवा	
				i) निबंध – 'यथरमै रोचते विश्वम्' लेखक – रामविलास शर्मा ii) लेखक ने प्रजापति (ब्रह्मा) से कवि की तुलना करते हुए स्पष्ट किया कि कवि अपनी रुचि के अनुसार जब विश्व को परिवर्तित करता है तो वह क्या करता है। iii) प्रजापति – कवि यथार्थ में विश्वास करता है। वह आदर्श और यथार्थ दोनों के उदाहरण वास्तविक जीवन से लेता है, वह जीवन में केवल दुख, निराशा, पीड़ा के चित्र ही साहित्य में नहीं दिखाता, अपितु सुख, आशा व हर्ष–उल्लास के स्वर भी भरता है। उसका साहित्य मनुष्य को उद्‌बोधित करता है, प्रेरित करता है भावी जीवन के उज्ज्वल पक्ष की ओर। भाषा में सहज प्रवाह, तत्सम शब्दावली। काव्यात्मकता का गुण है।	
11.	11 (क)	–	–	किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित :– प्राकृति के कारण विस्थापन अस्थायी होता है। मुसीबत टल जाने पर लोग पुनः अपने ही स्थान पर लौट आते हैं। किंतु औद्योगीकरण के कारण लोग अपना घर–बार छोड़ जिस किसी स्थान पर बस जाते हैं तथा वहीं मृत्युपर्यन्त रहते हैं। उनके वंशज भी वहीं रहते हैं। उनका विस्थापन स्थायी होता जा रहा हैं।	4+4=8 अंक
	(ख)			कहानी में बड़ी बहुरिया के नारकीय जीवन को वाणी मिली है। उसकी गरीबी, अकेलापन और उस पर हुए अत्याचार, सभी का यथार्थ चित्रण किया गया है। उसका दुख–दर्द भरा जीवन संवदिया के हृदय को भी द्रवित कर देता है, आदि उल्लेख अपेक्षित हैं।	
	(ग)			लडकी (पारो) मंसा देवी पर एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लेती है। वह लडके (संभव) का नाम भी जानना चाहती है। उसके व्यवहार से प्रेमांकुर का अहसास होने लगता है।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
		12 (क)		संवदिया के बारे में गांव वालों की अवधारणा है कि – i) वह कामचोर, निठल्ला और पेटू आदमी है। ii) वह डटाकर खाता है और चिंतारहित होकर सोता है। iii) उसके आगे–पीछे कोई नहीं है, इसलिए बिना मजदूरी लिए गांव वालों के संवाद पहुंचाता है। iv) वह औरतों का गुलाम है और उनके समाचार बड़े ध्यानपूर्वक लेकर जाता है। v) संवदिया के नाते उसकी विशेषता है कि – 1. वह संवाद इस प्रकार लेकर जाता है कि हवा को भी पता न ले। 2. संवदिया संवाद के प्रत्येक अक्षर को हूबहू याद रखता है। 3. वह संवाद को जिस रूप में सुनता है, उसी हाव–भाव और स्वर में सुनाता है। (कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक के दो अंक हैं)	
		(ख)		इस स्थिति में – i) धर्माचार्य, मठाधीश, पंडे–पुजारी आदि आम आदमी को मूर्ख बनाते रहेंगे। ii) आम आदमी को धर्म के वास्तविक रहस्य का ज्ञान नहीं होने देंगे क्योंकि वे अपना वर्चस्व खोना नहीं चाहेंगे। iii) वे धार्मिक अंधविश्वास फैलाने में अहम भूमिका निभाएंगे। iv) वे आम आदमी एवं समाज को अपना शिकार बनाकर अपने चंगुल में रखना चाहेंगे क्योंकि वे धर्म पर अपना एकाधिकार छोड़ना नहीं चाहेंगे।	
		(ग)		i) प्रस्तुत कथन से तात्पर्य है कि लेखक जब भी कहीं जाते तो वे खाली हाथ नहीं लौटते बल्कि उस स्थान की ऐसी वस्तु लेकर लौटते जिसका पुरातत्व की दृष्टि से विशेष महत्व होता है। ii) मृणमूर्तियां, सिक्के और मनके गांव में जहां कहीं भी मिलते उन्हें ले आते। एक छोटे से गांव के निकट पत्थरों के ढेर के बीच एक चतुर्भुज शिव की मूर्ति, जो गांववालों की दृष्टि से ओझल पड़ी थी, उठा कर इक्के पर रख लाए जिसका वजन लगभग बीस सेर होगा। iii) पसोवा से थोड़ी चीज मिलने की कमी उस मूर्ति ने पूरी कर दी। यह एक विशिष्ट उदाहरण है।	
			11. (क)	i) रोज़गार के दफ्तर को शेर का मुंह बताकर दोनों में साम्य स्थापित किया गया है। ii) शेर का मुंह सत्ता का प्रतीक है। जैसे शेर के मुंह में गया व्यक्ति कभी वापस नहीं लौटता इसी प्रकार रोज़गार के दफ्तर में पहुंचा व्यक्ति उस व्यवस्था का शिकार होकर अपना अस्तित्व खो देता है। iii) शेर के मुंह में गया व्यक्ति समाप्त हो जाता है परंतु रोज़गार के दफ्तर से जीवित बचकर आया व्यक्ति निरंतर झांसे में फंसा रहता है। यही दोनों में अंतर है। iv) इस कहानी के माध्यम से हमारी व्यवस्था की स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार और संवेदनहीनता पर व्यंग्य किया गया है।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
			(ख)	i) कहानी में लेखिका ने इस प्रकार घटनाओं का संयोजन किया है कि अनजाने में प्रेम का प्रथम अंकुरण संभव और पारो के हृदय में बड़ी अजीब परिस्थितियों में उत्पन्न होता है। ii) यहां प्रथम आकर्षण और परिस्थितियों के गुंफन ही उनके प्रेम को आधार और मजबूती प्रदान करता है। iii) इससे यह सिद्ध होता है कि प्रेम के लिए किसी निश्चित व्यक्ति, समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं है। वह कभी भी, कहीं भी, किसी भी समय और स्थिति में उत्पन्न हो सकता है। iv) कहानी के माध्यम से लेखिका ने प्रेम को बंबईया फिल्मों की परिपाटी से अलग हटा कर उसे पवित्र और स्थायी स्वरूप प्रदान किया है। v) कथ्य, विषय–वस्तु, भाषा और शिल्प की दृष्टि से कहानी बेजोड़ है।	
			(ग)	i) लेखक कौशांबी के गांवों में किसी महत्वपूर्ण मूर्ति की खोज में घूम रहा था। तब उन्हें एक खेत के किनारे बोधिसत्व की आठ फुट ऊंची एक सुंदर मूर्ति पड़ी दिखाई दी। ii) मूर्ति मथुरा के लाल पत्थर की थी सिर के अतिरिक्त पदस्थल तक यह मूर्ति संपूर्ण थी। iii) लेखक ने बुढिया के लालची मनोभाव को समझ कर उसे नुकसान की भरपाई के लिए दो रुपए देने का प्रस्ताव किया। v) बुढ़िया ने दो रुपए लेकर लेखक को वह मूर्ति दे दी। इस प्रकार लेखक बुढिया से बोधिसत्व की आठ फुट लम्बी सुंदर मूर्ति प्राप्त करने में सफल हो गया।	
12.	12	10	12	i) किसी एक कवि के अथवा लेखक के जीवन परिचय का वर्णन 2 ii) कवि या लेखक की रचनाओं का नामोल्लेख। 2 iii) दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं का वर्णन अथवा लेखक की भाषा–शैली की दो विशेषता का वर्णन। 2 विशेष – विवेचनात्मक शैली। भाषा–सहज, प्रवाहमयी, तत्सम शब्दावली।	6
	12	10	12	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जीवन परिचय (जन्म – मार्च 1911 कुशीनगर उत्तर प्रदेश मृत्यु – अप्रैल 1987 नई दिल्ली) शिक्षा – प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत एवं अंग्रेजी में बी.एस.–सी. एम.ए. अंग्रेजी। स्वतत्रता संग्राम में चार वर्ष जेल में बिताए। दो वर्ष नजरबंद रहे। किसान आंदोलन में सक्रिय रहे। कुछ वर्ष सेना में भी रहे। अनेक देशों की यात्रा की। वहां की प्रकृति, भावनाओं तथा विचारों का अध्ययन	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
				साहित्यिक परिचय :– साप्ताहिक 'दिनमान' के संस्थापक रहे। नवभारत टाइम्स का सम्पादन। 'तार सप्तृक' दूसरा सप्तृक 'तीसरा सप्तृक' तथा 'चौथा सप्तक' का सम्पादन। 'कितनी नावों में कितनी बार' काव्य संग्रह पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। रचनाएं – 'भग्नदूत' 'चिंता' 'इत्यलम्' 'बावरा अहेरी' 'हरी घास पर क्षण भर', 'इन्द्र धनु रौंदे हुए थें', 'अरी ओ करुणा प्रभामय', आंगन के पार द्वार', 'सागरमुद्रा' 'नदी के बांक पर', 'छाया', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'सन्नाटा' आदि। काव्यगत विशेषताएं :– *भावपक्ष* – युगों से चली आ रही घिसी–पिटी परंपराओं को छोड़कर नवीन परंपराओं को अपनाया। कलापक्ष – परंपरागत काव्य के शिल्प–विधान तथा शैली में परिवर्तन एवं संशोधन करके उसे अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के अनुकूल बनाया है। भाषा – संस्कृतनिष्ठ, स्वच्छ तथा परिष्कृत खड़ी बोली है। छंद – छंदों की मान्यता को तोड़ते हुए प्रतीत होते हैं। अलंकार – अलंकार प्रयोग की अपेक्षा 'बिंब–विधान' प्रतीक योजना और जीवन की समानांतर समीपस्थ अभिव्यक्ति को अपनाया है। (उपर्युक्त काव्यगत विशेषताओं में से किन्ही दो का उल्लेख अपेक्षित)	
	12	10	12	**अथवा** घनानंद – (जन्म – 1973, मृत्यु – 1760) i) रीतिमुक्त अथवा स्वच्छंद कवि। सुजान से प्रेम तथा प्रेम में असफलता। निराश तथा दुखी होकर वृंदावन चले गए और निम्सार्क संप्रदाय में दीक्षित होकर भक्त के रूप में जीवन निर्वाह करने लगे। ii) प्रमुख रचनाएं – 'विरह लीला', 'सुजान सागर', 'कृपाकंड निबंध', 'रसकेलि वल्ली'। iii) लाक्षणिकता, वक्रोक्ति आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग। v) प्रेम का अत्यंत निर्मल, गंभीर वर्णन।	2 2 2
	12	10 अथवा	12	**अथवा** रामचंद्र शुक्ल – (जन्म, शिक्षा, निधन) i) उत्तर प्रदेश के वस्ती जिले के अगौना नामक गांव में सन् 1884 में हुआ। आरंभिक शिक्षा उर्दू–अंग्रेजी तथा फारसी में हुई थी। मिर्जापुर में वे कुछ समय अध्यापक रहे। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वे हिंदी के प्राध्यापक रहे। यहीं हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में काम करते हुए सन् 1941 में उनका निधन हो गया 2	2

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
				साहित्यिक परिचय :– साप्ताहिक 'दिनमान' के संस्थापक रहे। नवभारत टाइम्स का सम्पादन। 'तार सप्तृक' दूसरा सप्तृक 'तीसरा सप्तृक' तथा 'चौथा सप्तक' का सम्पादन। 'कितनी नावों में कितनी बार' काव्य संग्रह पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। रचनाएं – 'भग्नदूत' 'चिंता' 'इत्यलम्' 'बावरा अहेरी' 'हरी घास पर क्षण भर', 'इन्द्र धनु रौंदे हुए थें', 'अरी ओ करुणा प्रभामय', आंगन के पार द्वार', 'सागरमुद्रा' 'नदी के बांक पर', 'छाया', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'सन्नाटा' आदि। काव्यगत विशेषताएं :– *भावपक्ष* – युगों से चली आ रही घिसी–पिटी परंपराओं को छोड़कर नवीन परंपराओं को अपनाया। कलापक्ष – परंपरागत काव्य के शिल्प–विधान तथा शैली में परिवर्तन एवं संशोधन करके उसे अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के अनुकूल बनाया है। भाषा – संस्कृतनिष्ठ, स्वच्छ तथा परिष्कृत खड़ी बोली है। छंद – छंदों की मान्यता को तोड़ते हुए प्रतीत होते हैं। अलंकार – अलंकार प्रयोग की अपेक्षा 'बिंब–विधान' प्रतीक योजना और जीवन की समानांतर समीपस्थ अभिव्यक्ति को अपनाया है। (उपर्युक्त काव्यगत विशेषताओं में से किन्ही दो का उल्लेख अपेक्षित)	
	12	10	12	**अथवा** घनानंद – (जन्म – 1973, मृत्यु – 1760) i) रीतिमुक्त अथवा स्वच्छंद कवि। सुजान से प्रेम तथा प्रेम में असफलता। निराश तथा दुखी होकर वृंदावन चले गए और निम्सार्क संप्रदाय में दीक्षित होकर भक्त के रूप में जीवन निर्वाह करने लगे। ii) प्रमुख रचनाएं – 'विरह लीला', 'सुजान सागर', 'कृपाकंड निबंध', 'रसकेलि वल्ली'। iii) लाक्षणिकता, वक्रोक्ति आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग। v) प्रेम का अत्यंत निर्मल, गंभीर वर्णन।	2 2 2
	12	10 अथवा	12	**अथवा** रामचंद्र शुक्ल – (जन्म, शिक्षा, निधन) i) उत्तर प्रदेश के वस्ती जिले के अगौना नामक गांव में सन् 1884 में हुआ। आरंभिक शिक्षा उर्दू–अंग्रेजी तथा फारसी में हुई थी। मिर्जापुर में वे कुछ समय अध्यापक रहे। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वे हिंदी के प्राध्यापक रहे। यहीं हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में काम करते हुए सन् 1941 में उनका निधन हो गया 2	2

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
				ii) प्रमुख रचनाएं – 1. हिंदी साहित्य का इतिहास 2. गोस्वामी तुलसीदास 3. सूरदास 4. चिंतामंणि (चार खंड) और रस मीमांसा आदि। iii) शुक्ल जी की गद्य शैली – 1. विवेचनांत्मक है, जिसमें विचारशीलता सूक्ष्म तर्क–योजना तथा सहृदयता का मेल है। 2. व्यंग्य और विनोद का पुट। 3. सारगर्भित, विचार प्रधान, सूत्रात्मक वाक्य – स्पना उनकी गद्य शैली की मुख्य विशेषताएं है।	2 2
	12		12	अथवा भीष्म साहनी – i) भीष्म साहनी का जन्म सन् 1915 में रावलपिंडी में हुआ। अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तक शिक्षा। पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की। 2003 में इनका निधन हुआ। ii) प्रमुख रचनाएं – 'भाग्यरेखा', 'कुंतो', 'भटकती राख', 'पहला पाठ', 'पटरियां', 'हानूश,' 'नीलोफर', 'माधवी', 'कबिरा खड़ा बाज़ार में (नाटक)', 'गुलेल का खेल', (बालोपयोगी कहानियां) आदि । iii) 1. भाषा में उर्दू शब्दों का प्रयोग। 2. विषय के प्रति आत्मीयता। 3. भाषा – शैली में पंजाबी भाषा की सोंधी महक। 4. छोटे–छोटे वाक्यों का सफल प्रयोग 5. संवादों का सटीक वर्णन।	2 2 2
13.	13 (क)	13 (ग)	13 (क)	कोई तीन प्रश्न करने हैं। सूरदास की झोंपडी का जलना और उनमें उसके भीख के रुपयों की थैली का गुम होना, इन सभी की राख में ही तो सूरदास की सारी अभिलाषाएं, उसके भावी सुनहले स्वप्न व उसकी भावी योजनाएं समाप्त हो गई। उसने अपने पुरखों का पिंडदान करना था, मिठुआ की शादी करके बहू लानी थी जो उसे भी रोटी पका कर खिलाती। झोंपड़ी जल जाने पर 'अब कहां रहेंगे'? यह प्रश्न भी उसके सामने आ खड़ा हुआ।	3+3+3=9 अंक
	13 (ख)	13 (क)	13 (ख)	बूढ़े तिरलोक सिंह का अब तक का जीवन पहाड़ पर ही बीता था। पहाड पर चढना–उतरना उसकी दिनचर्या थी। अतः अब वह पहाड़ पर चढ़ने जैसी नौकरी की बात सुनता है तो उसे अजीब लगता है।	
	13 (ग)	13 (घ)	13 (ग)	कोइयां एक प्रकार का जल–पुष्प, इसे 'कोका बेली' या 'कुमुद' भी कहते हैं। यह जहां कहीं पानी हो वहां पैदा हो जाता है। सरोवरों में शरद की चांदनी का प्रतिबिंब पड़ने पर इसकी खिली हुई पंखड़ियां इक्ट्ठी होकर जब दिखाई पडती है तो बहुत सुंदर लगती हैं।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
	13 (घ)	13 (ख)	13 (घ)	उद्योगों के कारण वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड की अधिकता है। उद्योगों के कचरे से नदी, तालाब, नालियों में पानी गंदला हो गया है। अंधाधुंध जंगल काट दिए गए अतः परिणामतः वर्षा अब पहले की भांति नहीं होती।	
14	14			सूरदास एक आदर्श पात्र है। वह क्षमा, दया, करुणा, सहानुभूति आदि गुणों से पूर्ण मानव है। मिठुआ का लालन–पालन करना, सुभागी को अपने यहां निडर होकर आश्रय देना इसके उदाहरण हैं। परिस्थितियों से जूझना उसका स्वभाव है। झोंपड़ी जल जाने पर उसे पुनः बनाने का संकल्प करना आदि कार्य उसके आशावादी एवं मन की दृढ़ता के परिचायक हैं। भारतीय संस्कृति के गुणों – क्षमा, शालीनता, आश्रयहीनों को आश्रय देना, पूर्वजों–पितरों को श्रद्धापूर्वक सम्मान देने में उसका दृढ़ विश्वास है, आदि गुणों पर प्रकाश डालना अपेक्षित है।	6 अंक
	14 अथवा	–	–	i) पहाड़ों में जन–जीवन की अपेक्षित सुविधाएं अभी भी प्राप्त नहीं हैं। ii) पहाड़ी जीवन में प्राकृतिक आपदाओं से जूझना पड़ता है। iii) हिमस्खलन होता रहता है। iv) मार्ग अत्यंत संकरे तथा खतरनाक हैं। v) सड़कों का प्रायः अभाव है। vi) रास्ते टेढ़े–मेढ़े, जीव–जन्तुओं से भरे हुए, लम्बे और उतार–चढ़ाव से युक्त हैं। vii) पहाड़ों में खाद्य–पदार्थों एवं पीने के पानी की भी सुविधा नहीं है। viii) पहाड़ का जीवन कष्टों भरा है। यहां वर्षा में फिसलन तथा मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। सर्दियों में सर्दी भी अधिक पड़ती है। अतः पहाड़ों का जीवन अत्यन्त कठिन है। iv) कहानी के माध्यम से लेखिका ने प्रेम को बंबईया फिल्मों की परिपाटी से अलग हटा कर उसे पवित्र और स्थायी स्वरूप प्रदान किया है। v) कथ्य, विषय–वस्तु, भाषा और शिल्प की दृष्टि से कहानी बेजोड़ है।	
		14.		भूप दादा ने खेतों को ढलवां बनाया। जब पानी की समस्या आ खड़ी हुई तब पहाड़ काटकर झरने को खेतों की तरफ मोड़ लिया। व्यक्तिगत जीवन भी कठिनाई भरा – पत्नी ने नदी में कूद कर जान दी, बेटा छोड़ गया, भाई भी चला गया। भूप दादा अत्यंत स्वाभिमानी (खुद्दार) प्रकृति के हैं। माही गांव के लोगों से इसलिए बात नहीं करते क्योंकि उन्होंने उनकी बकरी के बच्चे की देवता को बलि चढ़ा दी थी। भाई के अनुरोध को भी ठुकरा दिया।	
		अथवा		• पाश्चात्य दृष्टिकोण से अपनाई जा रही सभ्यता हमें उजाड़ देगी। • पेड़ों का अंधाधुंध काटना। • नदियों में पानी का अभाव।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1	29 / 2	29 / 3		
				• प्राकृतिक संसाानों का दोहन होने से वायुमंडल गर्म होता जा रहा है। • ऋतु–चक्र में परिवर्तन। • जनसंख्या में वृद्धि, उद्योगों का अनियमित फैलाव, रासायनिक अवशेष, धुआं आदि भी प्रदूषण को बढ़ाते हैं।	
			14	भूपसिंह और रूपसिंह में अंतर स्वभाव में अंतर – भूपसिंह परिश्रमी, स्वाभिमानी था, परंतु वह घर–परिवार से जुड़ा रहा। रूपसिंह में अलगाव, कर्म व परिस्थितियों से भाग जाना किंतु पश्चाताप कर स्वयं को सुधारने का प्रयत्न करना आदत हो गई। परिस्थितियों में अंतर – कठोर एवं विपरीत परिस्थितियों में भी भूपसिंह ठोस और सख्त हो निरंतर कर्मशील रहे। रूपसिंह अंत में बची–खुची जिंदगी के साथ इंसाफ करने की भावना रखता है किंतु भूपसिंह ने अपने आत्मसम्मान का परिचय देते हुए कहा कि उसके साथ किसी ने कोई इंसाफ नहीं किया। अब परिस्थितियां बदल गईं – उसे अपनी खुद्दारी के साथ जीने दिया जाए।	
			14 अथवा	भैरों का चरित्र–चित्रण – सूरदास अपनी परिस्थितियों से जितना दुखी व आहत है उससे कहीं अधिक आहत है भैरों और जगधर द्वारा किए जा रहे अपमान से, उनकी ईर्ष्या से। भैरों अपने अपमान और बदनामी का बदला लेने की सोचता है – तड़पाएगा, रुलाएगा। सूरदास को तभी उसे चैन मिलेगा – समाज में मिली बदनामी का बदला लेना उसके चरित्र का अवगुण बनकर उभरा ... आदि अन्य गुण–दोषों को दर्शाया जा सकता है।	